शोध_चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका

अंक:6; जनवरी_जून, 2023; पृष्ठ संख्या : 51-61

बिहुगीतों में असमीया सामाजिक जीवन का चित्र

सुनिता स्वर्गीयारी

शोध सार :

साहित्य और समाज दोनों का सम्बन्ध ओत-प्रोत है। साहित्य के माध्यम से हम एक समाज के बारे में जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं। विशेषकर लोक-साहित्य इस क्षेत्र में अधिक सहायक सिद्ध होता है। लोक- साहित्य का ही एक भाग है लोकगीत। असमीया लोकगीतों का एक भाग है बिहुगीत। असमीया समाज तथा संस्कृति अति प्राचीन है। बिहुगीत असमीया संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है। असम के जातीय उत्सव बिहु के अवसर पर गाये जानेवाले गीत बिहुगीत कहलाते हैं। प्राचीन काल से चले आ रहे बिहुगीतों में असमीया समाज-जीवन का वास्तव चित्र प्रतिफलित हुआ है। इसी बात को प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसके अध्ययन का महत्व सिर्फ इस बात पर नहीं है कि इसमें जनमानस का वास्तविक जीवन प्रतिबिम्बित होता है, बल्कि इसमें मानव-शास्त्र के अध्ययन का प्रामाणिक एवं ठोस सामग्री भी उपलब्ध होता है।

बीज शब्द : *लोक साहित्य, बिहुगीत, असमीया-समाज, संस्कृति*

प्रस्तावना:

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। मनुष्य के कार्यकलाप, उसकी गति-प्रगति समाज के साथ सम्बन्धित है। एक समाजविहीन मानव या मानवविहीन समाज की कल्पना व्यर्थ है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। क्योंकि साहित्य के माध्यम से एक समाज की रीति- नीति, धर्म-आचार, सामाजिक, राजनीतिक, अर्थनैतिक सभी दिशाओं का चित्र सामने आता है। साहित्य का

एक महत्वपूर्ण भाग है लोक-साहित्य । लोक साहित्य अर्थात लोक या जनसाधारण का साहित्य। लोक-साहित्य वह साहित्य है जिसके रचनाकार के बारे में जानकारियाँ उपलब्ध नहीं होती, जो मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रचलित होता रहता है, ये जनता द्वारा लिखा गया वह साहित्य है, जो साहित्य शास्त्र की रचना पद्धति और व्याकरणिक नियमों से मुक्त रहकर जनपदीय बोली के माध्यम से अपने जीवन तथा संस्कृति को वास्तविकता के साथ अभिव्यक्त करता है। लोक-साहित्य को लोक-संस्कृति का प्रतिबिम्ब भी कहा जा सकता है। क्योंकि इसके माध्यम से सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाले जनता की आशा-निराशा, हर्ष-विषाद, जीवन-मरण, लाभ-हानि, सुख-दुख आदि की सच्ची अभिव्यक्ति होती है। इसी अर्थ में वह शिष्ट या परिनिष्ठित साहित्य से भिन्न होता है। किसी भी समाज का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करने में लोक-साहित्य सर्वाधिक सहायक सिद्ध होता है। असमीया साहित्य जगत में लोक- साहित्य के विभिन्न उपादानों में एक अन्यतम उपादान है- लोकगीत । असमीया लोकगीत के भी कुछ भेद पाए जाते हैं - उनमें से एक भेद है -अनुष्ठानमूलक गीत । अनुष्ठानमूलक गीत के अन्तर्गत विभिन्न गीतों में असम का बिहुगीत उल्लेखनीय है। असमीया लोक-साहित्य जगत को समृद्ध करने में बिहुगीत की भूमिका महत्वपूर्ण है। कुछ गीत मौखिक परंपरा से प्राप्त हुए हैं । इसलिए उनके संदर्भ नहीं दिए गए ।

विश्लेषण :

असम का जातीय उत्सव बिहु के अवसर पर गाये जानेवाले बिहुगीत में असमीया समाज जीवन का चित्र देखने को मिलता है। असमीया लोक-साहित्य में विशिष्ट स्थान के अधिकारी बिहुगीतों की रचना का आधार असम तथा असम की प्रकृति, यहाँ के लोग तथा समाज हैं । कवियों ने असमीया समाज जीवन तथा असम की प्राकृतिक रूप-सौन्दर्य से प्रभावित होकर इन्हीं को माध्यम बनाकर बिहुगीतों की रचना की है। इसी कारण असमीया समाज जीवन का रहन-सहन, आचार-व्यवहार, रीति-नीति, धर्म- परम्परा, विश्वास आदि सभी दिशाओं का चित्र बिहुगीतों में देखा जाता है।

विभिन्न देव-देवियों की आराधना तथा अपने बड़े-बुजुर्गों से आशीर्वाद लेना असमीया समाज में अतीत से प्रचलित है, जो आज भी विद्यमान है। असमीया समाज की इस रीति का दर्शन बिहुगीतों में भी होता है-

चतते चकरि बहागत बगरी
जेठते आमना धान;
गरु-बिहुर दिनाखन लबा आशीर्वाद
तेहे पावा बैकुण्ठर थान। (गगै 2014: 9)

अर्थात् गरु बिहु (रङाली बिहु का प्रथम दिन, जो गौ के बिहु के रूप में मनाया जाता है) के दिन ईश्वर तथा बड़े-बुजुर्गों से आशिर्वाद लेना, तभी स्वर्ग में स्थान मिलेगा।

असमीया समाज धार्मिक है, वह ईश्वर की महिमा पर विश्वास करता है। इस प्रकार युगों से असमीया समाज में चले आ रहे ईश्वर के प्रति एकान्त विश्वास का उदाहरण बिहुगीतों में भी देखा जाता है-

विधि ऐ बिधाता स्रजोता पालोता
तेउरे उपरत भर;
तोमारे मोरे यदि जोरा आहे
तेवे पाति दिब घर। (गगै 2014: 224)

अर्थात् विधि ही सृष्टिकर्ता हैं और वे ही पालनकर्ता भी, उन्हीं पर सब निर्भर है। तुम्हारी और मेरी अगर जोड़ी मिलती है, तो वे ही हमारा घर बसाऐंगे । इस प्रकार असमीया समाज में प्रेमी-प्रेमिका भी अपने मिलन का भाग्य ईश्वर पर सौंपते हैं।

घर के सामने बड़ा आँगन, अनाज (धान) का भण्डार, रसोई, विभिन्न प्रकार के सब्जियों के बगीचे, पीछे पान-ताम्बूल और विभिन्न फलों के बगीचे तथा तालाब से असमीया ग्रामीण मध्यवर्गीय परिवार के घर का चित्र पूर्ण होता है। बिहुगीत में असमीया समाज की गार्हस्थ जीवन का यह चित्रण अंकित हुआ है-

मइ थाको चोतालत आइ थाके आखलत
तइ थाक भरालर मुखत;
बोपाइ बारित थाके ककाइ धानत लागे
देखाउ निदिया पाकत।(मौखिक परंपरा से संकलित)

अर्थात् मैं व्यस्त रहता हूँ आँगन में, माँ व्यस्त रहती है रसोई में, तुम व्यस्त रहती हो भण्डार घर के पास, पिताजी बगीचे में व्यस्त रहते हैं , भैया खेती में लगे रहते हैं , काम करती हुई आते-जाते तुम एकबार दिखाई भी नहीं देती हो।

असम कृषिप्रधान राज्य है। यहाँ के लोग कृषिकर्म के माध्यम से ही अपना परिवार चलाते हैं। वे लोग कठोर परिश्रम से खेती करते हैं। खेत ही उनका प्रथम कर्मस्थान है। बिहुगीतों में असमीया समाज के इस अभिन्न अंग का अति सुन्दर चित्रण मिलता है –

शालि धानर मरणा मारिलो चेनाइ ऐ
कठीयार नथलो सत्त;
उजनि नामनि केउराज मारिलो
टोलोठार नापालो सद्द। (गगै 2014: 55)

कृषिकर्म की महत्ता के कारण ही जब किसी युवक के विवाह की बात आती है तो उसके लिए एक ऐसी लड़की की तलाश होती है, जो इस काम में निपुण हो। अर्थात् जो धान की रोपाई करना जानती हो –

शाउनरे पथारत बोका पारि पारि

खेति करिबले;

शकत कै कलाफुलर छोवाली एजनी लागे मोक जानाने

बियाखन पातिबले।(संगीतकार-मानस रवीन,अंजना2005)

असमीया बहू-बेटी बयनकला में निपुण है। वह घर में ही अपने हाथों से कपड़ा बुनकर पहनती है और सबको पहनाती भी है। असमीया बहू-बेटी द्वारा बुने हुए बिहुवान (एक प्रकार का गमछा, जो बिहु के अवसर पर उपहार के रूप में दिया जाता है) देश-विदेशों में समादृत है। इस कार्य को असमीया नारी कमाई का माध्यम बनाकर परिवार को चलाने में पुरुषों के समान ही भागीदार बनती हैं। असमीया समाज में इस बुनाई कला का एक विशिष्ट स्थान है। इस कला का प्रधान साधन है- करघा, जिसे असमीया में 'ताँतशाल' कहा जाता है। यह करघा असमीया बहू-बेटियों की निजी सम्पत्ति है। असमीया युवती करघे में ही अपना सपना सजाती है। बड़े प्रेम से बिहुवान बुनकर प्रियजन को उपहार देती है। बिहुगीत में भी कपड़ा बुनना तथा इस कार्य का साधन यन्त्र- करघा के साथ साथ अन्य सामग्रियों ने स्थान प्राप्त किया है –

ढोलर चापर मारि हुलीया उलाले

बहि बै आछिलो ताँत;

टोपोलार सेन्दुर टोपोलाते थाकिल

खावले नहले भात।(गगै2014: 27)

मछली पकड़ना असमीया सामाजिक जीवन का एक अभिन्न अंग है। यहाँ के पुरुष और महिला दोनों ही मछली पकड़ने में निपुण हैं। विभिन्न नद-नदी, झील, तालाब आदि में लोग मछली पकड़कर खाते हैं तथा अनेक लोग इसे अपनी जीविका का माध्यम भी बना लेते हैं। बिहुगीत में इसका भी उल्लेख देखा जाता है –

जाकैया उलाले खालैया उलाले

मारे कोन बिलरे माछ;

सरुटि चेनाइके शिङि माछे फुटिले

परिल डेका लॅरार पाछ।(गगै2014:235)

सौत विद्वेष तथा ईर्ष्या नारी मात्र की प्रवृत्ति है। पत्नी के वर्तमान में अगर कोइ पति द्वितीय विवाह करना चाहता है, तो ऐसे पुरुष के साथ कोई भी युवती शादी नहीं करना चाहती। उनके अनुसार ऐसे पुरुष से शादी करने से ज्यादा कपड़ा बुनकर ही अपना पेट पालना अच्छा है-

गुचि याउँ गुचि याउँ पानचै नाउत उठि याउँ

कटक मारे किले खाउँ;

सतिनी लगालै याबरे सलनि

कटना काटिये खाउँ।(गगै 2014:222)

असमीया समाज में विवाह एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। युवक विवाह से पहले अपनी आर्थिक स्थिति सुधारणा चाहता है। निम्नलिखित बिहुगीत में वह विवाह से पहले कुछ कमा लेना चाहता है। इसीलिए वह प्रेयसी से कुछ दिन इंतजार करने का आग्रह करता है-

पानी नो खाबलै बाटि नाइकिया

भातलै नाइकिया पात;

तोमाक आनिबलै धने नाइकीया

आरु दिनचेरेक थाक।(गगै2014:215)

अर्थात् पानी पीने को कटोरा ही नहीं है, खाना खाने को थाली नहीं है। तुझे अपनाने के लिए धन भी नहीं है, अतः और कुछ दिन इन्तजार करो ।

कभी ऐसा भी होता है कि युवक-युवती एक दूसरे से प्रेम करते हैं, पर विभिन्न कारण से माता-पिता उन्हें शादी की अनुमति नहीं देते। ऐसी स्थिति में भाँगकर शादी करने की प्रथा भी असमीया समाज में प्रचलित हैं। परन्तु समाज इस कार्य का समर्थन नहीं करता है और उन्हें दोषी माना जाता है। इस दोष से मुक्त होने के लिए लड़के को धन की भरपाई करना पड़ती है। इसी कारण बिहुगीत में कहा गया है-

बिहु मारि थाकिबर मने ओइ लाहरि
बिहु मारि थाकिबर मन;
बिहु मारि थाकोते पलुवाइ निनिबि
भरिब लागिब धन।(गगै2014:8)

अर्थात् बिहु नाचते समय भगाकर मत ले जाना, नहीं तो धन की भरपाई करनी होगी।

बिवाह के क्षेत्र में असमीया समाज में जाति, वंश परंपरा देखी जाती है। साधारणतः बिवाह एक ही जाति-सम्प्रदाय में किया जाता है। परन्तु प्रेमजनित कारण से अनेक प्रेमिक-प्रेमिका जाति-सम्प्रदाय का बिचार न करके बिवाह करना चाहते हैं। इसलिए बिहुगीत में गाया जाता है-

तोमार मन गले मोर मन गले
कि करिब कलिता कुले।(मौखिक परंपरा से संकलित)

अर्थात् अगर तुम्हारा मन हुआ और मेरा भी मन हुआ , तो कलिता का कुल क्या कर सकता है ?

अधेड़ उमर में बिवाह के लिए लड़की खोजकर व्याकुल होनेवाले व्यक्ति की असमीया समाज में निन्दा की जाती है। बिहुगीत में इसका सुन्दर उदाहरण देखने को मिलता है-

बुढ़ाटो बुढ़ाटो धेन्देला बुढ़ाटो
उधानत खुन्दा खाइ मर,

http://shodhchintanpatrika.neglimpse.com/ T ISSN: 2583-1860

चकुरे नेदेखा कानेरे तुशुन

छोवाली बिछारि फुर।(मौखिक परंपरा से संकलित)

असमीया लोकसमाज में पान और ताम्बूल का एक विशिष्ट स्थान है। यहाँ पूजा-पाठ, विवाह आदि विभिन्न अनुष्ठान हो या घर आए मेहमान की मेहमाननवाजी पान और पुंगीफल का होना अनिवार्य है। असमीया समाज में अतिथि को पान खिलाकर सेवा सत्कार करना या किसी को पान ताम्बूल से प्रणाम करना उनके प्रति सम्मान प्रदर्शन करना होता है। इसके बिना कोई भी अनुष्ठान अधुरा होता है। बिहुगीतों में भी असमीया सामाजिक जीवन में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। असमीया समाज में दूसरी जात के हाथों से ताम्बूल खाने से जात-कुल भ्रष्ट हो जाने का विचार पुराना और परम्परागत है। बिहुगीत में इसका उल्लेख मिलता है-

तोमार कटा तामोल नेखाउ ऐ लाहरी

आमारे मरिब कुल;

अजाति नहउँ मइ बिजाति नहउँ मइ

तोमार मोरे एकेटि कुल।(गगै2014:167)

बिहुगीत के माध्यम से असमीया लोकधर्म का भी परिचय मिलता है। यह लोकधर्म लोक-विश्वास के आधार पर पनपता है। पूजा-पाठ, नाम-कीर्तन, बलि प्रथा आदि भी इसके अन्तर्गत आते हैं। इस समाज में प्रचलित बलि प्रथा का बिहुगीत में निम्न प्रकार से दर्शन होता है-

छाग किनि आनि दि याउँ बलि काटि

चराउँ महेश्वरक भोग;

नाम-गुरु भकतक शिरत तुलिलै

गछत मारिलो कोब ।(गगै2014:56)

अर्थात् बकरी खरीदके लाकर, बलि देकर मह देव को भोग चढ़ाऊँगा ।

असम विभिन्न जाति-जनजातियों की मिलनभूमि है। बिहुगीत में इन जाति-जनजातियों की एकता और सदभावना की चेतना मिलती है, जिससे असमीया समाज जीवन का आभाष मिलता है। असम का प्रधान नदी ब्रह्मपुत्र का असमीया लोक-जीवन के साथ एक अटूट रिश्ता है। अपनी गरिमा से वह प्रत्येक असमीया को गर्वित करता है। परन्तु हर साल बाढ़ के रूप में हजारों लोगों को बेघर, बेसहारा करके रुलाता भी है। बिहुगीत में ब्रह्मपुत्र का प्रायः उल्लेख मिलता है। उसकी संहारी रूप को देखकर बिहुगीत में गाया है-

ब्रह्मपुत्रर पाररे बर्हमथुरि एजुपि
आमिनो खरि लुरा ठाइ;
ब्रह्मपुत्र देवता उटुवाइ निनिबा
तामोल दि मातोता नाइ ।(गगै 2014: 121)

इसमें ब्रह्मपुत्र की संहार से सर्वहारा असमीया की अनिभूति व्यक्त हुई है। ब्रह्मपुत्र के साथ साथ असम में दिखौ, जाँजि, धनशिरि, शोबोणशिरी, दिहिङ, दिचाङ, भोगदै, कलङ, पागलादिया आदि अनेक नद-नदियाँ हैं, जिनका उल्लेख बिहुगीतों में मिलता है –

धनशिरि भेटिले जेत्रे ऐ जाबरे
खोबोणशिरि भेटिले किहे;
भङा खोलाकटि कमारे गढ़िले
यौवन गढ़ि दिले जिहे । (गगै2014:121)

फिर,

दिखौ नै एरिब पारौं मोइ लाहरि
जाँजी नै एरिब पारौं;

http://shodhchintanpatrika.neglimpse.com/ T ISSN: 2583-1860

तोमारे पीरिति एरिब नोव रौं

नेखाइउ मरिब पारौं। (गमै2014:103)

असम के सामाजिक तथा पारिवारिक जीवन में सम्बन्ध या रिश्तों का एक अलग महत्व है। बिहुगीत में 'आइ', 'ककाइ', 'जी-जाँवाइ', 'दादा', 'देउर', 'ननद', 'पिता', 'पुत्र' आदि असमीया सम्बन्धवाचक शब्दों का बहुल प्रयोग हुआ है । इन सबके अतिरिक्त कृषिजीवि असमीया घर में पालित गाय, बैल, बकरी आदि पशु तथा असमीया समाज में प्रचलित विभिन्न खाद्यसामग्री- दै(दही), माखन, खीर, भात, पिठागुड़ि (चावल का चूर्ण) आदि, विभिन्न वाद्ययंत्र, यहाँ तक कि बर्तन आदि का भी उल्लेख मिलता है। बिहुगीत में बाँस तथा उससे निर्मित चीजों का भी उल्लेख मिलता है। बाँस असमीया समाज का एक अभिन्न अंग है। इससे दैनन्दिन जीवन में व्यवहृत अनेक सामग्रियों का निर्माण किया जाता है। इन सभी का उल्लेख भी असमीया बिहुगीत में देखा जाता है।

निष्कर्ष :

इस आलोचना से देखा जाता है कि बिहुगीत मूलतः लोकानुभूति के गीत हैं । इसमें असमीया लोगों के सुख-दुख, हर्ष-विषाद, आशा-निराशा, जीवन-मरण, भय, प्रेम आदि समष्ट अनुभूतियाँ बड़े ही सजीवता के साथ व्यक्त हुयी हैं । इसके अतिरिक्त असमीया समाज में प्रचलित रूढ़ियों, परम्पराओं, प्रथा, लोक-विश्वास, उत्सव-त्यौहार, पर्व, रहन- सहन, आचार-व्यवहार आदि का भी स्पष्ट चित्र इसमें विद्यमान है। बिहुगीतों के माध्यम से असमीया लोक-समाज की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति का भी आभास मिलता है। बिहुगीतों में मूलतः सभ्यता के प्रभाव से दूर रहनेवाले आधुनिकता और यान्त्रिकता से मुक्त असमीया ग्रामीण समाज के लोगों का चित्रण है। इस प्रकार से बिहुगीतों ने असमीया सामाजिक जीवन का हर एक कोना अंकित किया है। निश्चित रूप से असमीया समाज जीवन को जानने का यह एक सशक्त माध्यम है। वह असमीया समाज जीवन के वास्तविक स्वरूप को उजागर करने में पूर्ण रूप से सक्षम है। जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण

है, उसी प्रकार बिहुगीत असमीया सामाजिक जीवन का दर्पण हैं। निश्चित रूप से बिहुगीतों के माध्यम से असमीया सामाजिक जीवन का एक स्पष्ट और गतिशील चित्र प्रतिफलित हुआ है। यहाँ उल्लेख करना जरूरी है कि समय के परिवर्तन के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक विभिन्न दिशाओं का भी परिवर्तन स्वाभाविक है। असमीया समाज का वास्तव चित्र वस्तुतः पुराने बिहुगीतों में अधिक मिलता है। क्योंकि नवीन बिहुगीतों में आधुनिकता के प्रभाव से ग्रस्त असमीया समाज जीवन का चित्र अधिक मिलता है। अतः पुराने बिहुगीतों के संरक्षण की सुव्यवस्था होनी चाहिए। इससे अन्य समाज-संस्कृति के लोग तथा आधुनिक असमीया समाज में आनेवाली नवीन पीढ़ी भविष्य में इस समाज के वास्तव चित्र को जान पाएंगे।

ग्रंथ-सूची :

गगै, लीला. बिहुगीत आरु बनघोषा. डिब्रुगड़ : बनलता, 2014.

बायन, भवजित. असमीया साहित्यर बुरंजी . गुवाहाटी : माँ लक्ष्मी पब्लिकेशन , 2013.

भट्टाचार्य, बसंत कुमार. असमीया लोकगीत समीक्षा . गुवाहाटी : चंद्रप्रकाश , 2007 .

शर्मा, हरिनाथ. असमीया साहित्यर पूर्ण इतिहास . पद्मप्रिया लाइब्रेरी, 2005.

शर्मा, हेमंत कुमार. असमीया साहित्यत दृष्टिपात . गुवाहाटी : वीणा लाइब्रेरी , 2011.

लिंक :

https://www.hindivyakran.com/2023/01/lok-sahitya-ka-arth-paribhasha-aur-swaroopspashta-kijiye.html

संपर्क-सूत्र :

सुनिता स्वर्गीयारी

सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग

राधा गोविन्द बरुवा महाविद्यालय, गुवाहाटी-25

BODHAK

Multidisciplinary Perspectives

A Multilingual Book of Research

Edited by
Dr. Pranjit Kumar Nath
Dr. Malabika Sarma
Dr. Joyanta Deka
Dr. Ashifuddin Ahmed Saikia

Work-life Balance: A Review
— Neha Tiwari 142

Promotion of Green Banking in Indian Banks
— Dr. Prerana Sarma 157

Microfinance and Self-Help Groups in East Khasi Hills, Meghalaya: A Study on Financial Inclusion and Empowerment
— Reveka Khan, Dr. Shahnaz Ali 174

From Online Orders to Doorstep Delivery: The Evolution of Last Mile Delivery in India
— Shashank Hazarika 191

Green Purchase Behaviour - A Study in the Kamrup Metro District of Assam
— Sumi Begum, Jisan Ali Ahmed 207

Enchanted Forests and the Role of Cybernetics in Bringing Forth This Dimension in *Snow White and the Huntsman*
— Tania Tarannam 227

मोहन राकेश द्वारा रचित 'आधे अधूरे' नाटक में आधुनिकतावाद
— डॉ करबी तालुकदार 235

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों के सामाजिक चेतना
— कसीरा जहाँ 243

असमीया **गीत-कविता में स्वाधीनता आंदोलन का प्रभाव**
— डॉ मालविका शर्मा 251

प्रेमचंद के साहित्य में नारी संघर्ष और चुनौतियाँ
— संगिता सिंह राँय 261

मृदुला गर्ग की कहानियों में आर्थिक विषमता- एक विश्लेषण
— सुनिता स्वर्णियारी 274

Contributor List 284

मृदुला गर्ग की कहानियों में आर्थिक विषमता- एक विश्लेषण

सुनिता स्वर्गीयारी

सारांश

हिन्दी साहित्य जगत की लोकप्रिय लेखिकाओं में एक परिचित नाम है मृदुला गर्ग। उपन्यास, कहानी संग्रह, नाटक, निबंध आदि सभी विधाओं में उन्होंने कलम चलाते हुए हिन्दी साहित्य जगत को समृद्ध किया है। उनकी रचनाओं में विषय की विविधता, लेखन की विशेषता और शैली शिल्प देखा जाता है। अपनी लेखनियों में नयापन और विविधता के कारण उन्हें आलोचक की ओर से कभी स्वीकृति मिली तो कभी सराहना भी मिली। उनकी अनेक रचनाओं का हिंदी, अंग्रेजी, जर्मनी, जापानी आदि विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है। साहित्य की अन्य विधाओं की तरह कहानीकार के रूप में भी मृदुला गर्ग को ख्याति मिली है। उन्होंने अपने कहानियों में युगीन समस्याओं पर बल देते हुए उन्हें सुधारने का प्रयास किया है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा समाज की ज्वलंत विविध प्रश्नों को उन्होंने अपनी रचनाओं के केंद्र में रखा।

'अर्थ' यानि धन। आर्थिक विषमता अर्थात् अर्थ (धन) की असमानता, यानी अर्थ की दृष्टि से एक ही समाज में रहनेवाले लोगों के बीच की असमानता। अर्थ मानव जीवन की महत्वपूर्ण अंग है। अर्थ के कारण ही समाज में अमीर-गरीब, उच्च-नीच की वर्ग भेद सृष्टि होती हैं। उच्च वर्ग निम्न वर्ग पर शोषण, अत्याचार करता है और निम्न वर्ग मूक बनकर बस सहता जाता है। अमीर अमीर बनते जाते हैं और गरीबों की स्थिति कभी सुधरती नहीं हैं। परिवर्तन के इस नवीन युग में विभिन्न दिशाओं में नयापन तथा बदलाव देखा गया हैं, परन्तु समाज में प्रचलित इस वर्ग व्यवस्था के क्षेत्र में कोई बदलाव आज भी नहीं आया है। लेखिका मृदुला गर्ग नें अपनी कहानियों में समाज के इसी आर्थिक विषमता को उजागर किया है। वे समाज में प्रचलित इस वर्ग व्यवस्था के विरोधी हैं। इसी कारण उन्होंने अपने कहानियों में आर्थिक विषमता को विषय बनाकर समाज में जागरूकता लाने का प्रयास किया है। प्रस्तुत अध्ययन में मृदुला गर्ग नें किस प्रकार

उनकी कहानियों में आर्थिक विषमता पर प्रकाश डाला है- स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा।

बीज शब्द- आर्थिक विषमता, कहानी, वर्गभेद, समाज, हिन्दी साहित्य

प्रस्तावना

अपने विशिष्ट लेखन के कारण साठोत्तरी लेखिकाओं में मृदुला गर्ग एक बहुत चर्चित लेखिका है ।अपने लेखनियों के कारण वह 'बोल्ड करार' लेखिका के नाम से जानी जाती है। उन्होंने अपने रचनाओं में समाज में घटित विभिन्न घटना, समस्या तथा मध्यवर्गीय लोगों के सुख-दुख, दर्द आदि को विषय बनाया। उनकी रचनाओं में महिला शोषण के साथ-साथ पुरुष शोषण का भी उल्लेख मिलता है, जो अन्य लेखिकाओं में मिलना मुश्किल है। शिक्षित से लेकर अशिक्षित तक एक व्यक्ति के जीवन में बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक जो जो परिस्थितियाँ, समस्याएं आती हैं, सभी को उन्होंने अपनी रचनाओं के तार में बांधा है। सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक सभी पहलुओं को उन्होंने अपनी रचना का विषय बनाया है।

जन्म परिचय

मृदुला गर्ग का जन्म 25 अक्टूबर 1938 को पश्चिम बंगाल के कोलकाता शहर के एक अमीर परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री विरेन्द्र प्रसाद जैन तथा माता का नाम रविकांता था। वें पांच भाई-बहन थे। पिता की नौकरी में तबादला के कारण विभिन्न स्थान में रहने का उनको मौका मिला था। जिसके फलस्वरुप उनको देश के हर जगह का अनुभव मिला था। जिससे विभिन्न लोगों से मिलने तथा उनकी जीवन की समस्याओं को समझने का मौका उनको मिला था। परिवार में उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता दी गई थी। इसी कारण परिवार के लोगों के साथ उनका जीवन हँसी खुशी से बिता था। उनके परिवार में साहित्यिक पत्रिका, अखबार आदि का अध्ययन सभी लोग करते थे, इसी कारण मृदुला गर्ग को भी बचपन से ही इनकी अध्ययन में रुचि बन गई थी। बचपन से ही वह हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषा की साहित्य का अध्ययन करते थे। एक स्थान पर उन्होंने उल्लेख किया है कि उनकी साहित्यिक रुचि का कारण उनकी बचपन की वह रुचि ही है।

शिक्षा

मृदुला गर्ग की सम्पूर्ण शिक्षा दिल्ली में हुई। पढ़ाई में वह हमेशा अच्छी रहीं। अध्ययन की रुचि के कारण बीमारी के कारण 3 साल स्कूल न जाने के बावजूद भी समय पर अच्छे से पढ़ाई समाप्त किया। साहित्य से जुड़े रहने की आदत के कारण ही वे साहित्य सृजन की दिशा में आगे बढ़ गए और एक विशिष्ट लेखिका के रूप में अपना परिचय बनाया।

पढ़ाई के साथ-साथ मृदुला गर्ग स्कूली दिनों से अभिनय, तर्क प्रतियोगिता आदि में भी रुचि रखती थी। अनेक नाटकों में भी उन्होंने अभिनय किया, जिसके कारण उन्हें सम्मानित भी किया गया और अनेक पुरस्कार भी मिला।

विवाह तथा सन्तान

सन 1963 में मृदुला गर्ग का विवाह श्री आनंद प्रकाश गर्ग के साथ सपन्न हुआ। विवाह के बाद मृदुला जैन, मृदुला गर्ग बनी। पेशे से वे अभियंता थे। उनके दो पुत्र क्रमशः शशांक विक्रम और आशीष विक्रम हैं।

साहित्यिक परिचय

मृदुला गर्ग ने हिन्दी साहित्य जगत के प्रायः सभी विधाओं पर कलम चलाया है। उन्होंने कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, अनुवाद आदि विभिन्न विधाओं पर लिखकर हिन्दी साहित्य भंडार को समृद्ध किया है। उनकी रचनाओं को हम निम्न प्रकार से देख सकते हैं -

उपन्यास- उसके हिस्से की धूप, वंशज, चितकोबरा, अनित्य, मैं और मैं, कठगुलाब।

कहानी- कितनी कैदें, टुकड़ा-टुकड़ा आदमी, डैफोडिल जल रहे हैं, ग्लेशियर से, उर्फ सैम, शहर के नाम, समागम आदि कुल सात कहानी है।

नाटक- एक और अजनबी, जादू का कालीन, तीन कैदें।

निबंध संग्रह- रंग-ढंग, चुकते नहीं सवाल।

अनुवाद- चितकोबरा, उसके हिस्से की धूप, डैफोडिल जल रहे हैं।

आर्थिक विषमता

मनुष्य जीवन में अर्थ की महत्व अपरिसीम है। आर्थिक स्थिति से ही एक देश तथा युग की राजनीतिक, सामाजिक स्थिति प्रभावित होती है। धन के आधार

पर ही मानव का भी मूल्यांकन होता है।

आर्थिक विषमता व्यक्ति समूह, जनमानस के आबादी की समूह या दो देशों के, दो राष्ट्र के आर्थिक स्थिति के अंतर को दर्शाता है। आर्थिक विषमता यानी आर्थिक असमानता, जो आय की असमानता, धन के असमानता या धन के अंतर को भी दर्शाता है। इसी के आधार पर समाज में वर्ग विभेद होते हैं, उच्च-नीच, अमीर-गरीब, महाजन-गुलाम, किसी को सम्मान तो किसी को अपमान। वस्तुत: एक व्यक्ति के जीवन को अर्थ सर्वाधिक प्रभावित करता है।

पराधीन भारत में विदेशियों द्वारा भारतीय लोगों पर भारी मात्रा में आर्थिक शोषण हुआ। औद्योगिक क्रांति के बाद देश की आर्थिक स्थिति और भी दयनीय हो गई थी। बेरोजगारी बढ़ गई, किसानों के अधिकार कम होते गए। जमींदारों के हाथों किसान शोषित होने लगे। समय के साथ मशीनी उद्योग ने भी देश में जगह ले लिया। परिणाम स्वरुप देश में उद्योगपति अमीर उच्च वर्ग, मध्य वर्ग और निम्न वर्ग- ये तीन वर्ग बन गए। अमीर अमीर होते गए और गरीब की हालत बिगड़ते गए।

आजादी के बाद पंचवर्षीय योजनाओं के निर्माण से देश की अर्थव्यवस्था में कुछ परिवर्तन हुआ। परंतु बढ़ती हुई बेरोजगारी, जनसंख्या विस्फोट और गरीबी के कारण वर्ग संघर्ष बनी रही। इस प्रकार साधारण जनता आर्थिक शोषण के चक्र में पीसते रहें।

मृदुला गर्ग की कहानियों में आर्थिक विषमता

साहित्य में समाज का चित्र प्रतिबिंबित होता है। इसीलिए साहित्य में हम समाज की हर घटना, समस्या, स्थिति को देख सकते हैं। हिन्दी साहित्य भी इससे अलग नहीं है। परन्तु हिन्दी साहित्य जगत में अन्य विधाओं की तुलना में कहानी में वर्ग व्यवस्था, वर्ग संघर्ष आदि का यथार्थ रूप से अवतारणा कम मात्रा में हुई है। कुछ ही कहानीकारों ने देश की इस आर्थिक विषमता को अपने कहानियों का विषय बनाया है। क्योंकि आर्थिक स्थिति को अपने कहानियों का विषय बनाने पर उन्हें मार्क्सवादी या विदेशी साहित्य की नकल करने का नाम दिया जाता है। संभवत यही कारण है कि कहानीकार लोग ऐसे विषय से दूर रहे। क्योंकि उन्हें इस प्रकार के वितर्क नहीं चाहिए था। परन्तु कहानीकारों की इस प्रकार की विचार को हम उनकी साहस हीनता ही मानेंगे।

फिर भी ऐसा नहीं कहा जा सकता कि हिन्दी कहानी में आर्थिक विषमता

के चित्र को किसी ने भी प्रस्तुत नहीं किया। प्रेमचंद, यशपाल, भैरव प्रसाद गुप्त, परदेसी, हंसराज रहबर आदि ने समाजवादी दृष्टिकोण से इस विषय पर लेखनी चलाई है। ठीक उसी प्रकार महिलाओं की लेखिकाओं में मृदुला गर्ग की कहानियों में इस विषय पर चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने कहानी में गरीब मजदूरों की दशा का अंकन करने के साथ-साथ श्रमिकों की विद्रोह चेतना का भी चित्रण किया है। समाज के निम्न वर्ग के माध्यम से कहानियों में अन्याय का विरोध किया है। वर्ग संघर्ष की यथार्थ चित्रण के माध्यम से पूंजीपतियों के प्रति विद्रोह दिखाया। अपने कहानियों में यह दिखाया कि किस प्रकार पूंजीपति वर्ग राजनीतिक प्रभाव में रहकर अपने मुनाफे के लिए मंत्री, अफसर, उद्योगपति के साथ हाथ मिलाते हैं तथा संपर्क रखते हैं। उनकी इस प्रकार के कहानियों में मौत में मदद, बेनकाब, नहीं, नकार, बाकी दावत, उसका विद्रोह, अनाड़ी, टुकड़ा-टुकड़ा आदमी आदि प्रमुख है।

मौत में मदद

प्रस्तुत कहानी में अमीर लोगों की दिखावे भरी दान कार्य पर प्रकाश डाला गया है। अमीर लोग जीवित अवस्था में गरीबों की मदद नहीं करते। परन्तु उनके मृत्यु के बाद कफन और दाह संस्कार के लिए आर्थिक दान करके समाज में नाम कमाने की कोशिश करते हैं। इस कहानी में गरीब बुद्धन की आर्थिक अभाव के कारण उसका छोटा सा बेटा ज्वर ग्रस्त होकर मर जाता है। उसके दाह संस्कार के लिए भी बुद्धन के पास पैसा नहीं था। अतः वह अपने मालकिन से मदद मांगता है। उसकी विनती सुनकर मालिक अनिल कहता है कि- 'मौत में आदमी आदमी की मदद नहीं करेगा तो कौन करेगा? एक न एक दिन सभी को यह दिन देखना है न।' (मृदुला गर्ग टुकड़ा- टुकड़ा आदमी 1983, पृ 89)

अनिल के इस कथन में झूठी सहानुभूति, अमीरी और दंभ था। क्योंकि उसकी आंखों में बुद्धन के बच्चे की मृत्यु का जरा भी दुख नहीं था। एक संवेदनशून्य व्यक्ति के जैसे सिर्फ कुछ पैसे देकर मुक्त हो जाना चाहता था। उसने कभी भी उस बच्चे की जीवित अवस्था में इलाज के लिए सहायता करना आवश्यक नहीं समझा। इस प्रकार इस व्यंग कथा में समाज के उच्च वर्ग के लोगों का मजदूर वर्ग के प्रति हीन भावना को दिखाते हुए अमीरों के प्रति व्यंग दिखाया गया है।

बेनकाब

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने मूल पात्र माधो के माध्यम से समाज में प्रचलित

जमींदारी शोषण के विरुद्ध विद्रोह दिखाया है। किस प्रकार एक साधारण व्यक्ति शोषण और अन्याय के कारण डाकू और बागी बन जाता है, उसे दिखाया है। जमींदारों के शोषण नीति, गरीबों की जमीन हड़पना, उनकी स्त्रियों को अपनी वासना का शिकार बनाना, अपने खिलाफ आवाज उठाने वाले गरीबों को सरकार तथा पुलिस की सहायता से चोर, डाकू, उग्रवादी घोषित करके उनके जीवन नष्ट करने के जैसे क्रूर कारनामों का इस कहानी में बेनकाब किया गया है। कहानी के नायक माधो के पिता द्वारा जमींदारों के गलत काम का विरोध करने पर माधो और उसके माँ को पकड़कर ले जाता है और पुलिस इंस्पेक्टर उसके सामने ही उसकी माँ की श्लीलता भंग करने के कार्य को देखकर वह सहन नहीं कर पाता है। अत: प्रतिशोध के लिए वह इंस्पेक्टर बेतवा की हत्या करता है। फिर भी उसकी प्रतिशोध की भावना शांत नहीं होता। वह डाकू बन जाता है। परंतु उसने कभी भी गरीब या किसी निर्दोष पर अत्याचार नहीं किया।

एक समय पर उसे यह लगने लगता है कि सरकार के सामने आत्मसमर्पण करने से उसके शहीद साथियों की जब्त की गई जमीन वापस कर देगी। यह सोचकर उसने आत्मसमर्पण किया। परंतु सरकार ने उसकी इस प्रस्ताव का विरोध किया। इसीलिए अपने आत्म समर्पण की कार्य से वह पश्चाताप करने लगे और बागी बन गया। उसके मन में समाज के तथाकथित सभ्य पुरुषों के प्रति आक्रोश भर गया था। लेखिका ने यहाँ माधो के द्वारा क्रांति का समर्थन किया है।

कहानी द्वारा यह संकेत भी उभरता है कि- 'जब तक कारखाने नहीं खुलेंगे गरीबों को नौकरी नहीं मिलेगी, उसका शोषण होता रहेगा, तब तक बागी बनते रहेंगे, हत्याएँ होती रहेगी । यह वर्ग संघर्ष है । समस्या का यही पक्ष बेनकाब में आया है।' (अग्रवाल, 2004: 64)

नहीं

इस कहानी को एक बालक का 'गद्यमय शब्दचित्र'(अग्रवाल, 2004: 64) भी कहा जा सकता है। क्योंकि इसमें कहीं-कहीं रेखाचित्र जैसा झलक मिल जाते हैं। इस कहानी में रेल के डिब्बो में कोका-कोला की बोतल बेचने वाले गरीब बालक खेमू का व्यक्तित्व साकार हो उठता है। इसमें लेखिका ने मध्यवर्गीय वर्ग के अमानवीयता और गरीब लोगों के लाचारी और दीनता का मजाक उड़ाने की चरित्र को सबके सामने लाया है। कहानी में खेमू रेल के जिस डिब्बे में जाता है, वहाँ दस- बारह आदमी (ताश पीटने वाले) को कोका-कोला की बोतल बेचता

है। खाली बोतल वापस लेते समय उसे एक बोतल और उसके पैसे कम मिलते है। वह घबरा जाता है और बोतल वापस मांगने लगता है। बेचारा लड़का बार बार मांगने पर भी जब उसकी बातो पर कोई ध्यान नही देता तब - 'गरीब पर जुल्म मत करो बाबूजी' कहने लगा। उसकी इस प्रकार की विनती से इधर कोका-कोला खरीदनेवाले उन आदमियो को कोई फर्क नहीं पड़ रहा था, उधर डिब्बे मे सोने वाले बाकी यात्रियों को परेशानी हो रही थी। क्योंकि इससे उनकी नींद खराब हो रही थी। एक महिला ने उसे चुप करने के लिए उसे तीन रुपयाँ देते हुए कहा- 'पता नहीं रेलवे वाले इन यतीमों को गाड़ी के अंदर आने क्यों देते हैं ? ले यह तीन रुपये और फूट यहाँ से !'(गर्ग,मृदुला. उर्फ सैम.1986-पृ 90)

उस महिला की रुपए देने में जरा भी मानवीयता की भावना नही थी। सेमू को यह दान स्वीकार्य नहीं था। वह आश्चर्य होता है कि यह किस तरह के लोग हैं, जिनमें सहानुभूति का लेश मात्र नाम नहीं था। इसी कारण सेमू पैसे लेने से मना करते हुए कहता है- उसे पैसे नहीं बोतल चाहिए । बोतल लिए बिना वह नही जाएगा। यहाँ उसका आंतरिक विद्रोह प्रकट हो जाता है।

इस कहानी में बाल मजदूरी की समस्या भी उभर कर आया है। सेमू की तरह अनेक गरीब बच्चे अपने बाल अवस्था में मौज-मस्ती तथा आनंद को भूलाकर दो पैसे कमा कर जीवन बिता रहे हैं । गरीबी के कारण बाल्यावस्था में ही कोई मजदूरी करता है तो कोई चोरी डकैती के जैसे गलत रास्ते पर जाते हैं ।परंतु कोई भी अमीर व्यक्ति उन पर सहानुभूति नहीं रखता। सब घृणा की नजर से देखता है। सेमू द्वारा पैसा ना लेकर सिर्फ बोतल का बार-बार मांग करना, उसका आत्म सम्मान तथा शोषण सहते-सहते विद्रोही बन जाने का संकेत दिया गया ही

बाकी दावत

इस कहानी में मृदुला गर्ग ने निम्न वर्गीय और उच्च वर्गीय परिवार की जीवन के बीच की अंतर को स्पष्ट किया है। उच्चवर्गीय लोगों के जूठन और उतरन पर पलने वाले उनके नौकर तथा मिणराम के जैसे परिवार की छवि को कहानीकार ने सबके सामने लाया है। बीबीबाई के बेटे-बेटी अमित बाबा और स्वाति बेबी की जन्मदिन की बची-खुची मिठाई-पकवान जूठन के रूप में पाकर भी मणिराम का परिवार बहुत खुश होना अत्यंत कारुणिक दृश्य है। बीबीबाई की पहनी हुई विभिन्न पुराने कपड़े पहनकर मणिराम के कुटुंबी अपने जीवन गुजारते है।

कहानी में आर्थिक संपन्नता के कारण किस तरह लोग भोग विलासी तथा चरित्रहीन बन जाते हैं, उसे भी दिखाया है। बीबाबाई जिस रंगे सियार के साथ अपनी रातें रंगीन करती है, उसी के पीछे दुम हिलाता हुआ उसका पति अपनी ठेके पास करवाता है। सब कुछ जानकार भी वह पत्नी से कुछ भी नहीं कहता। यहाँ अर्थ के कारण दोनों की चारित्रिक स्खलन दिखाया गया है। उच्चवर्गीय लोगों के अनैतिकता तथा चरित्रहीनता को देखकर मणिराम स्वयं को नामर्द और लाचार अनुभव करता है। उनके साथ रहकर वह भी शराब पीना सिखता है।

बीबीबाई की मेहरबानी से मणिराम की बेटी और बेटा को नौकरी भी मिल जाती है। इतना सब कुछ मिलकर भी मणिराम खुश नहीं है, क्योंकि अब उसे डर लगने लगा है कि धीरे-धीरे अमीरी तौर तरीके जो उनके बच्चे नकल करने लगे हैं, कहीं ऐसा ना हो जाए कि एक दिन उनके बच्चे भी अमीर लोगों की तरह अनैतिक और चरित्रहीन ना बन जाए।

अनाड़ी

अनाड़ी कहानी में निम्नवर्गीय व्यक्ति के मन में उच्चवर्गीय व्यक्ति के प्रति घृणा और द्वेष की भावना को दिखाया है। कहानी में बारह साल की सुवर्णा एक अमीर घर की नौकरानी है। आर्थिक विवशता के कारण बाल्यावस्था में ही उसे लोगों के घर में नौकरानी बनाकर कमाना पड़ता है। परंतु कम उम्र होने के कारण उसे भी दूसरों की तरह स्कूल जाने, दोस्तों के साथ खेलने, झूला झूलने बिस्किट खाने, फिल्म देखने का मन करता है। परंतु उसकी ये आंतरिक इच्छाएं मन में ही रह जाती है। इसी कारण उसके मन में विद्रोह की भावना आ जाती है। कभी-कभी उसकी मालकिन और सेठ उस पर सहानुभुति दिखाते हैं। परंतु सुवर्णा जानती है कि उनकी यह हमदर्दी सिर्फ बातों में हैं, सिर्फ दिखावा है। इसी कारण विद्रोह के स्वर में वह कहती है- 'इतना तरस आ रहा है तो भेज दो ना इस्कूल, करवा दो उसकी पढ़ाई लिखाई का इंतजाम। ना ओ इसके बस का नई। फिर कौन करेगा झाड़ू-फटका, कौन मलेगा भांडे।' (गर्ग. शहर के नाम पृ॰ 31) उसे अपने मालकिन के आलसी स्वभाव पर भी चिढ़ आती है। यहाँ बाल मजदुरी के साथ साथ गरीब परिवार के बच्चे किस प्रकार शिक्षा, पसन्द की खाना, खेल कुद जैसी बचपन विभिन्न आनन्द से बंचित रह जाते है उसको भी दिखाया है।

उसका विद्रोह

व्यक्ति विद्रोह को दिखाने वाले इस कहानी में गांव का एक लड़का आर्थिक

अभाव के कारण अपने पेट की भूख को मिटाने के लिए गाँव से शहर जाता है। शहर में एक अमीर घर में नौकर का काम करने लगता है। वह देखने में सुंदर ना होने के कारण गाँव में उसकी शादी नहीं हो रही थी। अब वह अपने बालों को अपने मर्जी से बना कर रखना चाहता था। पर अपने साहब उसे काटने के लिए कहता है। मेमसाहब तो हर समय उसे हुक्म देता है, डांटती है। इन सब से वह अपने को शोषित महसूस करने लगता है। एक दिन गाँव से उसकी मामा चिट्ठी भेजते हुए बताता है कि शादी के लिए लड़की मिल गई है। अब उसे गाँव वापस जाना है । वह खुश हो जाता है, उसके व्यक्ति स्वतंत्रता की भावना अधिक बढ़ जाती है। वह साहब-मेमसाहब की हर बात को ठुकराकर अपने मन की करता है। बर्तन नीचे पटकाकर, खुले आम आंगन में नहाकर, गाना गाकर वह अपने मालिक के प्रति विद्रोह दिखता है। कहानी में आर्थिक व्यवस्था किस प्रकार लोगों के व्यक्ति स्वतंत्रता तक को छीन लेता है, उसे दिखता है, दूसरी और अमीरी के कारण लोग किस तरह से दूसरों की स्वतंत्रता तक को हड़प लेना चाहते हैं उसको भी दिखाया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार देखा जाता है कि कहानीकार मृदुला गर्ग ने अपने कहानियों के माध्यम से हमारे समाज में प्रचलित वर्ग व्यवस्था का एक यथार्थ चित्र अंकन किया है। इस वर्ग व्यवस्था में एक वर्ग शोषक और दूसरा शोषित होता है । मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता होती है रोटी, कपड़ा और मकान । समाज के गरीब वर्ग की स्थिति ऐसी है कि उनको जीवन की ये प्राथमिक आवश्यकता ही नसीब नहीं होती। फल स्वरुप उसे अपनी सभी इच्छाएँ त्याग करनी पड़ती है, अपना आत्मसम्मान खोना पड़ता है और स्वतंत्र देश का नागरिक होकर भी व्यक्ति स्वतंत्रता को खोना पड़ता है। दूसरी और अमीरी के कारण कुछ पैसे तनख्वाह के रूप में देखकर एक व्यक्ति को अपना गुलाम बनाकर उसकी इच्छा अनिच्छा सब अनदेखा करके अपने इशारे पर नचाते हैं । ये वर्ग व्यवस्था सामाजिक संघर्ष तथा विद्रोह का भी कारण है। इस प्रकार मृदुला गर्ग ने आर्थिक समस्या से संबंधित कहानियों की रचना के द्वारा यह दिखाया है कि अर्थ के अभाव में निम्न वर्ग कितना झुलसता है और आर्थिक संपन्नता किस प्रकार उच्च वर्ग को बिलासी बना देता है। अर्थ के कारण ही अनेक लोग गलत रास्ता अपना लेते हैं। समाज में अर्थ की इस विषमता को दूर करने की आवश्यकता है। जब समाज में आर्थिक विषमता

दूर होगा तभी वर्ग व्यवस्था की भी समाप्ति होगी। आर्थिक विषमता की दूरीकरण के लिए सरकार को देश के मजदूर लोगों के लिए उद्योग, कारखाने आदि खोलकर रोजगार तथा नौकरी की व्यवस्था करनी होगी। तभी देश से वर्ग- संघर्ष दूर होगा और देश उन्नति की दिशा में आगे बढ़ेगा।

ग्रन्थ-सूची

हरदयाल, डॉ., डॉ नगेन्द्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास. दिल्ली= मयूर पब्लिकेशन, 2021.

अग्रवाल, डॉ. तारा. मृदुला गर्ग का कथा साहित्य. कानपुर= विद्या प्रकाशन, 2004.

बागलकोट, डॉ.(श्रीमती) राजु. मृदुला गर्ग के कथा साहित्य का मूल्यांकन. कानपुर= अमन प्रकाशन, 2006.

भारद्वाज, जगदीश. चर्चित कहानियाँ. जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली= सामयिक प्रकाशन,1993.

गर्ग, मृदुला. उर्फ सैम. नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली= राजकमल प्रकाशन, 1986.

गर्ग, मृदुला. टुकड़ा- टुकड़ा आदमी. दरियागंज, नई दिल्ली= नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 1983.

गर्ग, मृदुला. शहर के नाम. लोधी रोज, नई दिल्ली= भारतीय ज्ञानपीठ,1990.

भारद्वाज, जगदीश. समागम. दरियागंज, नई दिल्ली= सामयिक प्रकाशन, 1998.

The term '*Bodhak*', rooted in Sanskrit, signifies "one who awakens or enlightens." This concept is at the heart of the volume's purpose: to foster intellectual enlightenment through cross-disciplinary engagement. The collection of research articles from diverse fields aims to break down the silos that often separate academic inquiry, creating space for a more holistic and interconnected understanding. In the modern world, where the complexities of global challenges often demand insights from multiple domains, the multidisciplinary approach of Bodhak is both timely and essential. By embracing a multidisciplinary perspective, the volume encourages readers to think critically about how knowledge in one field can enrich our understanding of others. This book will be of immense help to the prospective students, policy makers, scholars and researchers.



Dr. Pranjit Kumar Nath (M. Com, M.A., L.L.B., Ph.D, PGDCA)
Principal, R. G. Baruah College, Fatasil Ambari, Guwahati, Assam

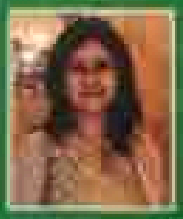

Dr. Malabika Sarma (M.A., PhD)
Associate professor & Head, Dept. of Hindi



Dr. Joyanta Deka (M.A., B.Ed., PhD)
Assistant professor, Dept. of Assamese
R. G. Baruah College, Fatasil Ambari, Guwahati, Assam
R. G. Baruah College, Fatasil Ambari, Guwahati, Assam



Dr. Ashifuddin Ahmed Saikia (M. Com, PhD, JAIIB)
Assistant professor, Dept. of Accountancy
R. G. Baruah College, Fatasil Ambari, Guwahati, Assam

Price : ₹ 1395.00

ISBN: 978-93-91606-87-5

GLOBAL PUBLISHING HOUSE (INDIA)

• Bhubaneswar • Guwahati • Hyderabad
• New Delhi • Visakhapatnam

REFRAMING WOMANHOOD

DISCOURSES, IDENTITIES AND RESISTANCE

Edited by
KABITA BHUYAN
JINI RANI BORO

21. উদ্ভৱকালীন অসমীয়া উপন্যাস আৰু নাৰীৰ অৱস্থান

ড° লিপিকা তালুকদাৰ 199

22. मोहन राकेश के नाटक 'आधे-अधूरे' में स्त्री विमर्श

डॉ करबी तालुकदार 212

23. अमृता प्रीतम की आत्मकथाओं में नारी मुक्ति का स्वर

कमीरा जहाँ 222

24. उषा प्रियंवदा की नारी पात्रों में आत्मनिर्णय की चेतना :'पचपन खंभे लाल दीवारें' और 'रुकोगी नहीं राधिका' के संदर्भ में

डॉ मालविका शर्मा 232

25. मन्नू भंडारी के उपन्यास में स्त्री का बदलता स्वर: परंपरा से आधुनिकता तक

सुनिता स्वर्गीयारी 240

26. খনামিহিৰের ঢিপি : সভ্যতার বিবর্তনের ধারায় নারীর সামাজিক অবস্থান

অমৃতা সিকিদার, সঞ্জয় ভট্টাচার্য 250

27. নবনীতা দেবসেনের রূপকথা সমগ্র : নারীত্বের এক ভিন্ন স্বর

তপতী দত্ত 266

मन्नू भंडारी के उपन्यास में स्त्री का बदलता स्वर: परंपरा से आधुनिकता तक

*सुनिता स्वर्गीयारी**

प्रस्तावना

मन्नू भंडारी हिन्दी कथा-साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण नाम हैं, जिनके लेखन में स्त्री-चेतना, सामाजिक वास्तविकता और मनोवैज्ञानिक गहनता का अद्भुत संयोजन मिलता है। पारंपरिक भारतीय समाज में नारी की पहचान प्रायः घर, पति, संतान और सामाजिक मानदण्डों के संदर्भ में तय की जाती रही है। किन्तु आधुनिकता—शिक्षा, रोजगार, नगरीकरण और वैचारिक स्वतंत्रता—ने नारी की अपेक्षाओं और आत्म प्रतिनिधित्व के तरीकों में बदलाव लाया है। भंडारी की उपन्यासों में स्त्री पात्र परंपरागत भूमिकाओं की जकड़ों से निकलकर आधुनिकता के बोध, आत्म-अस्तित्व और निर्णय-स्वतंत्रता की ओर बढ़ती दिखाई देती है। प्रस्तुत अध्ययन भंडारी के प्रमुख उपन्यास—आपकाबंटी (1971) और स्वामी (1982) को आधार बनाकर स्त्री स्वर की इस यात्रा का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

विश्लेषण

इस आलेख का केंद्र बिंदु यह है कि मन्नू भंडारी के उपन्यासों में स्त्री पात्रों का स्वर कैसे विकसित होता है। उनकी प्रारम्भिक रचनाओं में परंपरागत सीमाओं के भीतर विचारशील आत्म-आवेदन दिखाई दे सकता है, जबकि बाद की कृतियाँ अधिक सक्रिय आत्म-उद्घोष, विद्रोह, या सूक्ष्म आत्म-आलोचना के स्वर समेटती हैं। इसके अतिरिक्त, भंडारी के कथानक में छोटे-छोटे अवसाद, भावनात्मक जटिलताएँ

*सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, राधा गोविन्द बरुवा महाविद्यालय

और निजी निर्णयों के निहितार्थ आधुनिक नारी की स्थिति को उजागर करते हैं। भंडारी की नारी न तो पूर्णतः विद्रोही है न पूर्णतः समर्पित; वह सामाजिक ढांचे के भीतर रहते हुए अपनी पहचान गढ़ती है और इस प्रक्रिया में एक नई स्त्री-वाणी का निर्माण करती है।

'आपका बंटी' में शकुन मुख्य स्त्री पात्र है। वह पढ़ी-लिखी है, प्रिंसिपल है। जो अपने बेटे के साथ अकेली रहती है, जिसका पति दूसरी स्त्री के साथ उनसे दूर रहते है। मीरा और फूफी इस उपन्यास की सहायक स्त्री पात्र हैं। 'स्वामी' में मिनी मुख्य स्त्री पात्र है। वह भी पढ़ी-लिखी है। जो अपने प्यार के बारे में बता नहीं पाती और मामा तथा माँ की मान रखते हुए नरेन्द्र को छोड़कर घनश्याम से विवाह करती है। मिनी की माँ, सास, ननद और देवरानी इस उपन्यास का अन्य स्त्री पात्र हैं।

इन दोनों उपन्यास में स्त्री की स्वर और उसमें देखे गए बदलाव पर हम निम्नलिखित बिन्दुओं में आलोचना प्रस्तुत करेंगे-

स्त्री स्वर का परंपरागत स्वरूप: मौन, सहन और कर्तव्यबद्धता

भारतीय समाज में स्त्री को त्यागमयी, सहनशील और परिवार-केन्द्रित माना गया है। ये एक स्त्री की परम्परागत स्वरुप है। जिसमें-

- विवाह को स्त्री का अंतिम लक्ष्य समझा जाता है।
- पति और परिवार के प्रति समर्पण उसका कर्तव्य माना जाता है।
- व्यक्तिगत आकांक्षाओं का दमन सामाजिक स्वीकृति पाता है।

प्रारंभिक भारतीय कथा-साहित्य में स्त्री का स्वर प्रायः दबी हुई आंतरिक संवाद तक सीमित रहता है। परिवार और पति के प्रति समर्पण को उसका प्रमुख गुण माना जाता था। मन्नू भंडारी की उपन्यास में इस परंपरागत स्त्री की छवि का चित्रण देखा जाता है, किंतु साथ में उसके भीतर उठनेवाली असंतोष और प्रश्नों को भी उभारा है।

उदाहरण के रूप में स्वामी की नायिका सामाजिक बंधनों को माननेवाली, सहनशील नारी है। परंतु उसके भीतर लगातार उस बन्धन को तोड़कर चले जाने का मन होता है, सास की अन्याय का प्रतिवाद करना चाहती है और बाद में करती भी है। अन्य पात्र मिनी की माँ और सास में पारम्परिक विचार देखा जाता है जो

पूजा पाठ, नियमों का पालन करती है, जिसमें बेटी की शादी की चिन्ता बनी रहती है।

स्वामी की नायिका मिनी प्रारंभ में एक ऐसी स्त्री के रूप में सामने आती है जो सामाजिक मर्यादाओं और पारिवारिक निर्णयों को सहज रूप से स्वीकार करती है। उसका विवाह परिस्थितियों और परिवार की इच्छा के अनुसार होता है। अपना प्रेम नरेन्द्र के बारे में किसी से कुछ कह नहीं पाती। यह स्थिति उस परंपरागत सोच को दर्शाती है जहाँ स्त्री को सहनशील, त्यागमयी और कर्तव्यपरायण माना जाता है। मिनी का यह रूप भारतीय मध्यवर्गीय समाज में स्त्री की पारंपरिक भूमिका का प्रतिनिधित्व करता है।

उनकी दूसरी उपन्यास आपका बंटी में शकुन का प्रारंभिक जीवन इसी परम्परागत ढांचे में बंधा दिखाई देता है, जहाँ वह पत्नी और माँ की भूमिका को प्राथमिकता देती है। तलाक की कार्यवाई आगे बढ़ने के बाद भी वह ये उम्मीद भी रखती है कि कही उनका बेटा बंटी के कारण वे फिर से एक हो जाए, उनका परिवार फिर से पूर्ण हो जाए। 'न चाहते हुए भी आशा की एक हल्की-सी किरण मन में कौंधी थी। कौन जाने बंटी ही... ।' (भंडारी,2019,36) तलाक के कार्यवाई के दौरान वह तमाम मानसिक तनाव के बीच से गुजरती है। अपने बेटे बंटी को लेकर, उसके भविष्य को लेकर चिन्तित रहती है। प्राय मौन रहती है। पति को खोने के बाद अब बेटे को खोना नहीं चाहती है वह। बहुत प्यार करती है उससे, हमेशा अपने पास सटाकर रखती है। यहाँ हम शकुन में एक स्त्री की परम्परागत स्वरूप को देखते है जो अपने घर को टूटने से बचने की उम्मीद आखरी पल तक रखती है। फिर अपने साथ हुई अन्याय का याद आते ही वह क्रोधित हो जाती है। उसके मन में पति को हर तरह से हराने की, दुख पहुचाने की इच्छा जागती है और वह भी अपने लिए नया जीवनसाथी चुन लेती है।

इस प्रकार भंडारी परंपरागत स्त्री की ही छवि प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि उसके भीतर एक नए विचार की आहट भी दिखाती हैं।

संक्रमण का स्वर: संघर्ष, संवाद और आत्मबोध

मन्नू भंडारी के लेखन का मध्य दौर स्त्री स्वर की यात्रा का संक्रमणकाल कहा जा सकता है। यहाँ स्त्री पात्र न तो पूरी तरह पारंपरिक भूमिका निभा पाते हैं और

न ही पूरी तरह आधुनिक चेतना को स्वीकार कर पाते हैं। उनकी उपन्यास के नारी का ये द्वंद्व ही उनकी रचनाओं को वास्तविक और जीवन बनाता है।

उनकी प्रसिद्ध कृति आपका बंटी में नायिका शकुन न तो परम्परागत पत्नि की तरह अपने अरमानों को, आकांक्षाओं को छोड़कर पति की दूसरी महिला के साथ सम्बन्ध को सह पाती है और न ही सामाजिक मूल्य पूरी तरह त्याग पाती है। उसके लिए यह असहनीय है कि उसका प्राप्य पति अजय से किसी दूसरी स्त्री को मिल रही है। इसी कारण अजय से अब उसे कोई लगाव नहीं रहा, हर पल बस उसे हराने की, उसके बिना अजय को दुखी होता, तड़पता, छटपटाता हुआ देखने की कोशिश होती रही। इसी कोशिश में तलाक का निर्णय होता है। अजय को हराने की कोशिश में ही सात वर्ष में विभागाध्यक्ष से प्रिंसिपल हो गई। वह जो चाहती है हासिल कर लेती है, फिर भी वह पराजित ही अनुभव करती है। घुटी-घुटी सी रहती है। परिणामस्वरूप उसे मिलती है—लगातार संघर्ष, अपराधबोध और आत्म-चिंतन। 'सामने वाले को पराजित करने के लिए जैसा सायास और सन्नद्ध जीवन उसे जीना पड़ा उसने उसे खुद ही पराजित कर दिया। सामनेवाला व्यक्ति तो पता नहीं कब परिदृश्य से हट भी गया और वह आज तक उसी मुद्रा में, उसी स्थिति में खड़ी है- साँस रोके, दम साधे, घुटी-घुटी और कृत्रिम।' (भंडारी, 2019, 37)

'सात वर्षों में विभागाध्यक्ष से प्रिंसिपल हो जाने के पीछे भी कहीं अपने को बढ़ाने से ज्यादा अजय को गिराने के आकांक्षा ही थी। वह स्वयं कभी अपना लक्ष्य रही ही नहीं। एक अदृश्य अजान-सी चुनौती थी, जिसे उसने हर समय अपने सामने हवा में लटकता हुआ महसूस किया था और जैसे उसका मुकाबला करते-करते, उससे जूझते-जूझते ही वह आगे बढ़ती चली गई थी। पर इतने पर भी जब सामनेवाला नहीं टूटा तो उसकी सारी प्रगति उसके अपने लिए ही जैसे निरर्थक हो उठी थी।' (भंडारी, 2019, 37. 38)

शकुन एक प्रतीक है—उस नारी का, जो बदलते सामाजिक ढांचे में अपनी जगह तलाश रही है। उसके संवादों में एक नई नारी-वाणी उभरती है—वह प्रश्न करती है, वह निर्णय लेती है, वह परिणामों का सामना भी करती है।

यह स्त्री-वाणी ना तो विद्रोहपूर्ण है और ना ही समर्पित—यह एक साधारण स्त्री की स्वाभाविक मनःस्थिति को दर्शाती है, जो परिवर्तन के मुहाने पर खड़ी है।

स्वामी में नायिका मिनी को विवाह के बाद प्रथम अवस्था में पति से कोई लगाव नहीं था क्योंकि वह किसी और से प्रेम करती थी। परन्तु बाद में जब वह पूरे

घर के लिए दिन-भर मेहनत करने वाला, घर के हर सदस्य की खयाल रखनेवाला पति घनश्याम के प्रति सौतेली माँ की भेदभावपूर्ण व्यवहार को देखती है, उसको बातों- बातों में टाना मारती है, प्रथम कुछ दिन वह सहती है। पर बाद में वह इसके विरुद्ध आवाज उठाती है। 'एक ही घर में दो भाई। एक की हाजिरी बजाने और उसके लिए सुख-सुविधाएं जुटाने को सारा घर लगा हुआ है तो दूसरा कब खाता है, क्या खाता है- यह देखने की भी किसी को फुर्सत नहीं। वह रात-दिन इस घर के लिए खटता है, पर उसके लिए दो क्षण भी खटने को कोई तैयार नहीं। और मिनी ने आकर ही क्या किया? घनश्याम के प्रति अपनी बेरुखी और उदासीनता से सास-ननद को सब कुछ करने की छूट नहीं दे दी? एकाएक उसे लगा जैसे रात-दिन होने वाले इस अन्याय में उसका भी कहीं हाथ है। और यह ख्याल आते ही उसका अपना मन ही उसे धिक्कारने लगा। अनायास ही उसकी आंखों में आंसू आ गए। नहीं, घर वालों के इस अन्याय को वह अब एकदिन भी बर्दाश्त नहीं करेगी।' (भंडारी, 1982,54)

द्वन्द और आत्मसम्मान की भावना

एक समय था जब नारी को अपने आत्मसम्मान को छोड़कर घर-परिवार की सम्मान को ध्यान में रखना पड़ता था। विवाह के बाद तो प्रायः स्त्री की निजस्व कुछ भी नहीं रहती। परन्तु समय के साथ उसमें बदलाव आया। शिक्षा ने स्त्री को अपने अस्तित्व से पहचान कराया। वह भी अपनी आशा-आकांक्षा, पसन्द-नापसन्द के हिसाब से करने लगी। पर समाज में आज भी नारी की इच्छाओं को सामने रखने की अनुमति पूर्ण रुप से नहीं हो रही है। फलत अपनी इच्छाओं की पूर्ति में नारी को आज भी बाधाओं की सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उसके मन में एक प्रकार का द्वन्द चलती रहती है। वह आत्मसम्मान को खोने की वेदना से आहत होती है, परन्तु इससे बाहर भी निकल नहीं पाती। भंडारी की 'आपका बंटी' और 'स्वामी' दोनों ही उपन्यास की नायिका के मन में इस प्रकार का द्वन्द चलता रहता है। मिनी में अपने प्रेम और मामाजी की अन्तिम वाणी तथा ससुराल में अपने पति को लेकर, सास, ननद और देवरानी की तानो को लेकर द्वन्द चलती रहती है। मम्मी में तलाक को लेकर, बेटे को लेकर और अपनी दूसरी शादी को लेकर द्वन्द चलती रहती है।

शिक्षित नारी स्वाभिमानी होती है। जो स्वाभिमानी होती है उनमें आत्मसम्मान की भावना होती है। कोई उसे थप्पे या लांछित करे तो वह अपमानित महसूस करती

है। मिनी को जब देवरानी और ननद रसोई घर में काम करने से मना करती है और उसे घृणा की नजरों से देखती है तब वह अत्यन्त अपमानित महसूस करती है- मिनी के तन-बदन में आग लग गई। इतना अपमान ! तो अब वह अस्पृश्या हो गई? वह तनतनाती हुई कमरे में आई। भड़ाक से दरवाजा बन्द कर दिया। ठीक है, वह जब तक यहाँ है, अपनी छाया भी किसी पर नहीं पड़ने देगी। लेकिन एक असह्य घुटन से उसका मन छटपटाने लगा। (भंडारी, 1982:100)

शकुन की त्राण उसका पति किसी दूसरी स्त्री को देता है। उसके साथ नहीं रहना। ये शकुन के लिए अत्यन्त असहनीय होती है। उसके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचती है, वह अपमानबोध करती है। फलस्वरूप वह पति को हराने की हर कोशिश करती है। इसी कोशिश में वह उच्च पद तक पहुच जाती है, परन्तु इससे भी उसके मन को शान्ति नहीं मिलती। वह विभिन्न प्रकार से पति को पछटाना करने की कल्पना करती है, कल्पना में ही दुखी कराकर आत्मसन्तुष्टि लेती है। अन्त में पति अगर कर सकता है तो वह क्यों नहीं विचार को आगे रखकर वह भी अपने लिए नया जीवनसाथी चुन लेती है।

आधुनिक स्वर: आत्मनिर्णय, स्वतंत्रता और सामाजिक चेतना

भंडारी के लेखन का अंतिम चरण स्त्री-वाणी के सशक्त रूप को प्रस्तुत करता है। आधुनिक मूल्य, शिक्षा, आत्म-स्वीकार और सामाजिक चेतना यहाँ अधिक स्पष्ट हो जाती है। भंडारी के उपन्यास की स्त्रियाँ-

- अन्याय के खिलाफ खड़ी होती हैं
- सत्ता-ढांचे पर प्रश्न करती हैं
- अपने अस्तित्व की परिभाषा स्वयं तय करती हैं

यह नारी-वाणी आधुनिक चेतना का प्रतीक है—जो तर्कसंगत है, संवेदनशील है और आत्मविश्वासी भी।

'आपका बंटी' में शकुन अपने साथ हुई अन्याय को सहन नहीं करती, बल्कि पति को पछटाते हुए देखने की कोशिश करती रहती है, तलाक का निर्णय लेती है। अपने लिए नया जीवनसाथी चुन लेती है। इस प्रकार वह स्वतन्त्र होकर अपने लिए निर्णय लेती है। 'कम से कम अब तो वह इन सबसे मुक्त हो जाए। उसे मुक्त होना

ही है, एक नई जिन्दगी की शुरुआत करनी ही है। ... अजय को उसे दिखा ही देना है कि वह अगर एक नई जिन्दगी की शुरुआत कर सकता है तो वह भी कर सकती है। नहीं, उसे किसी को कुछ नहीं दिखाना है। जो कुछ भी करना है, अपने लिए करना है।' (भंडारी, 2019,47)

'स्वामी' की नायिका मिनी शिक्षित है, ग्रन्थ अध्ययन करती रहती है। यही कारण है कि वह स्वतन्त्र होकर अपने लिए निर्णय लेने की क्षमता रखती है। पति के प्रति घरवालों के भेदभावपूर्ण व्यवहार का विद्रोह करती है। नरेन्द्र से प्रेम तथा ससुराल के लोगों की तानों को और न सहने की इच्छा से वह घर छोड़कर नरेन्द्र के साथ चली जाती है। वह स्वयं निर्णय लेती हुई कहती है- नरेन, मैं साथ चलूंगी। स्वर में न आवेश था, ना उद्विग्नता। था तो केवल एक दृढ़ संकल्प। (भंडारी, 1982,105) परन्तु अपने निर्दोष पति घनश्याम के बारे में सोचकर वह नरेन्द्र के साथ नहीं जा पाती है। क्योंकि ऐसा करने से वह भी घनश्याम के साथ अन्याय ही करेगी। वह सोचने लगती है- 'परिवार वालों के अन्याय और अपमान से बचाने के लिए किस तरह घनश्याम कवच की तरह उसके आगे-पीछे रहता था, अपनी सारी विनम्रता के बावजूद जिसने कभी घर वालों को मिनी के आत्म-सम्मान पर ठेस नहीं पहुंचाने दी, आज उसी को वह घर वालों का निर्मम उपहास सहने के लिए छोड़ आई, घर वालों द्वारा किए हुए अपमान की ज्वाला में झुलसने के लिए छोड़ आई है और मिनी की आंखों से झर-झर करके आंसू झरने लगे। उसका अपना ही मन उसे धिक्कारने लगा, 'यह क्या कर डाला उसने ? यह किसके साथ बदला लिया है उसने घनश्याम के साथ या खुद अपने साथ ? लौट चल लौट चल।' मन जैसे भीतर से ठेलने लगा।' (भंडारी, 1982,107) इस विचार के बाद वह नरेन्द्र से स्पष्ट रूप में कहती है- 'नरेन, मैं लौटकर जाऊंगी।' (भंडारी, 1982,108) और वह अपने माँ के घर चली जाती है। यहाँ हम नायिका की आधुनिक स्वर तथा सामाजिक चेतना को भी देखते हैं।

भाषा और शैली: स्त्री स्वर को उभारने की तकनीकें

मन्नू भंडारी की भाषा सरल, सहज और संवाद प्रधान है। वे भारी-भरकम नारीवादी शब्दावली का सहारा नहीं लेतीं, बल्कि रोज़मर्रा के घरेलू दृश्यों, छोटे-छोटे संवादों और मनोवैज्ञानिक संकेतों से स्त्री के बदलते स्वर को उभारती हैं।

उनकी शैली की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है —

1. आंतरिक एकालाप— स्त्री की आत्म-चेतना को उजागर करता है। अपनी आत्मसम्मान तथा आकांक्षाओं की पूर्ति के राह में उसे कदम कदम संघर्ष करनी पड़ती है। उसके भीतर अनेक विचारों के द्वन्द की ताना-बाना चलती रहती है। मम्मी जो कुछ भी करती है- उसमें क्या मिला, वह सन्तुष्ट क्यों नहीं है, वह भी अपने जीवन में आगे बढ़े या नहीं, फिर अपने बेटे के साथ क्या होगा या फिर बेटे के जरिए ही अजय और वह फिर से एक हो पाए आदि विभिन्न विचारों का अपने आप में वार्तालाप चलती रहती है। स्वामी में उपन्यास के अन्त तक मिनी में इस प्रकार का आन्तरिक एकालाप देखा जाता है।

2. यथार्थवादी संवाद — दबे हुए स्वर से लेकर मुखर विरोध तक की यात्रा को दर्शाते हैं। आज की यथार्थ यही है कि नारी की स्वर अब पहले जैसी दबी हुई नहीं है। उसने अपनी समर्थता को पहचान लिया है। उसमें अब स्वाभिमान- आत्मसम्मान की भावना है। अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आज वह हर बाधा को लांघने की शक्ति रखती है। मन्नू भंडारी की उपन्यास के स्त्री पात्र का संवाद आज की इस यथार्थता को उजागर करता है।

3. सामाजिक परिस्थितियों का सूक्ष्म चित्रण — पारिवारिक और सामाजिक ढाँचे के भीतर स्त्री की स्थिति को वास्तविक बनाता है। आपका बंटी में मम्मी और स्वामी में मिनी के साथ-साथ उसकी माँ, सास, ननद, देवरानी इनकी जो परिस्थितियाँ होती है, या जो स्थिति उनके सामने खड़ी होती है वह हमारे समाज की वास्तव परिस्थिति है। भंडारी जी ने इतनी सुक्ष्मता से चित्रण किया है कि अध्ययन करते समय महसूस होता है जैसे हमारे समाज में देखे-सुने किसी की कहानी पढ़ रहे हैं, कहानी इस प्रकार जुड़ जाते है मानों सबकुछ हमारे आखों के सामने घटित हो रही है।

4. मौन और विरामों का उपयोग — अक्सर स्त्री का मौन ही सबसे गहरा संदेश देता है। दोनो ही उपन्यास के मुख्य पात्र अधिकतर समय मौन ही रहती है। मौन होकर विचारों में विलिन रहती है। बंटी अपने माँ को देखता है कि कभी अकेले बैठे हुए या कभी उसको अपने पास

छिपाकर रखते हुए बड़े प्यार से बात करते करते अचानक ऊपर देखते हुए मौन होकर कुछ सोचने लगती, आँखों से आँसू बहने लगती है। वकील चाचा के प्रश्नों का वह ज्यादातर मौनता से देती है।

चंचल खूब बातें करनेवाली, अपना तर्क रखने वाली मिनी को भी विवाह के बाद उपन्यास में ज्यादातर समय मौन रूप में ही देखा जाता है। उस घर में अधिकांशतः उसके साथ विरोध की स्थिति ही बनी है। ऐसे में वह सास, ननद या देवरानी के साथ तर्क न करके किताब का सहारा लेती हुई मौन रहना पसन्द करती है।

इस प्रकार दोनों ही उपन्यास के मुख्य पात्र मौनता के साथ अनेक बातें कह देती है।

निष्कर्ष

भारतीय समाज में स्त्री की भूमिका सदियों से परंपरागत मानदण्डों द्वारा निर्धारित की जाती रही है—संस्कारों का बोझ, परिवार-निष्ठा, मौन-सहनशीलता और कर्तव्यबद्धता। आधुनिकता और शिक्षा के विकास के साथ यह संरचना धीरे-धीरे बदलने लगी। इसी बदलाव को सबसे संवेदनशील रूप में हिंदी कथा-साहित्य ने पकड़ा, विशेषतः महिला लेखिकाओं ने। इनमें मन्नू भंडारी का नाम प्रमुख है, जिन्होंने स्त्री जीवन की जटिलताओं को बिना अतिशयोक्ति, बिना भाषणबाजी और बिना नारेबाजी के अत्यंत सहज और स्वाभाविक रूप में चित्रित किया।

मन्नू भंडारी की रचनाओं में नारी एक जीवंत मनुष्य की तरह उभरती है—उसकी इच्छाएँ, संघर्ष, पीड़ा, आशाएँ और असुरक्षाएँ सब कुछ पाठक के सामने स्वाभाविक रूप से उपस्थित होता है। उनके उपन्यासों में स्त्री का स्वर धीरे-धीरे परंपरा की बंधनों से निकलकर आधुनिक चेतना और आत्म-निर्णय की राह पर अग्रसर होता है। इस परिवर्तन को समझना न केवल साहित्यिक दृष्टि से, बल्कि समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से भी महत्वपूर्ण है।

मन्नू भंडारी के उपन्यासों में स्त्री स्वर की यात्रा परंपरा से आधुनिकता की ओर बढ़ती हुई यात्रा है—लेकिन यह यात्रा रैखिक नहीं, जटिल, द्वंद्वपूर्ण और यथार्थोन्मुख है। उनकी स्त्री न तो केवल विद्रोह करती है और न ही केवल सहनशील रहती है; वह परिस्थितियों, अनुभवों और आत्मबोध के आधार पर अपनी राह बनाती है।

भंडारी का लेखन स्पष्ट संकेत देता है कि आधुनिकता स्त्री को नए अवसर देती है परंपरा उसे पीछे खींचती है और इन दोनों के बीच वह अपनी पहचान गढ़ती है

इस प्रकार मन्नू भंडारी की स्त्री-वाणी एक संक्रमणशील, विकासशील और संवेदनशील मानव-वाणी बनकर उभरती है, जो आज भी हिंदी साहित्य और नारीवादी विमर्श के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सहायक ग्रन्थों की सूची

हरदयाल, डॉ., डॉ., नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, 2021, मयूर पब्लिकेशन, दिल्ली

भंडारी, मन्नु, आपका बंटी, छब्बीसवाँ संस्करण 2019, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली

भंडारी, मन्नु, स्वामी, प्रथम संस्करण 1982, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली

शुक्ल, उमा, भारतीय नारी अस्मिता की पहचान, संस्करण 2007, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

पाथरीकर, डॉ. सौ. मेहर दत्ता, साठोत्तरी हिन्दी महिला कथा-लेखन में आधुनिकता बोध, प्रथम संस्करण 2007, शैलजा प्रकाशन, कानपुर

शर्मा, कविता, भारतीय स्त्री सामाजिक प्रस्थिति और विकास, प्रथम संस्करण 2012, रजत प्रकाशन, नई दिल्ली

आनन्द, कुमारी श्वेता, मन्नु भंडारी के उपन्यासों में स्त्री- चेतना का विश्लेषण, यूनिवर्सल रिसर्च रिपोर्टस, वॉलिउम 09, इस्यु 04, अक्टूबर- दिसम्बर 2022

Reframing Womanhood: Discourses, Identities and Resistance is a multidisciplinary edited volume that explores women's identities, struggles, empowerment, and resistance in contemporary society. The book discusses themes such as motherhood, reproductive rights, unpaid care work, digital feminism, political participation, education, and marginalized women's experiences. Through literary, social, economic, and historical perspectives, the articles challenge patriarchal norms and highlight women's agency and resilience. Special emphasis is given to voices from Assam and Northeast India. The volume promotes gender equality, inclusive knowledge production, and feminist scholarship, making it a valuable academic resource for students, researchers, and scholars



Kabita Bhuyan, Secretary, Women's Studies Cell, is an Assistant professor in the Department of Economics, R.G.Baruah College, Guwahati, Assam.

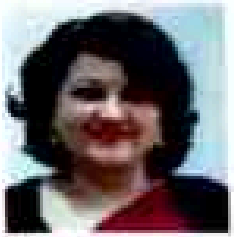

Jini Rani Boro, Assistant Secretary, Women's Studies Cell, is an Assistant Professor in the Department of History, R.G.Baruah College, Guwahati, Assam.

GLOBAL PUBLISHING HOUSE (INDIA)

• Bhubaneswar • Guwahati • Hyderabad
• New Delhi • Visakhapatnam

Price : ₹ 1395.00

ISBN: 978-93-47586-30-9

9789347586309